Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College

مولانا مظہر الحق ٹیچرس ٹریننگ کالج

Recognised by ERC, NCTE, Bhubaneswar,
Affiliated to L.N. Mithila University, Darbhanga & B.S.E.B., Patna

MATHURAPUR, SAMASTIPUR - 848101 (BIHAR) INDIA

CULTURAL ACTIVITIES

Course B.Ed **Session** 2022-24

Name Tunji Prakash

Class Roll No. 220032

Board/ University Roll No. 2341145

Reg. No. 2242911710 Year 2023

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College ESTD Mathurapur

Date

सांस्कृतिक-क्रियाएँ

मानव की सबसे बड़ी संपति उसकी संस्कृति है। अपनी संस्कृति के कारण ही वह एक सामाजिक प्राणी बनता है। प्राकृतिक दशाओं को अपने अनुकूल बनाने की क्षमता प्राप्त करता है।

संस्कृति का तात्पर्य शिष्टाचार अथवा विनम्रता मात्र से नहीं है, बल्कि संस्कृति उस पहलुओं से है, जिसमें हम जीवन के प्रतिमानों, व्यवहार के तरीको को भौतिक व अभौतिक प्रतिकों, परपंराओं, विचारों सामाजिक मूल्यों, मानवीय क्रियाओं और आविष्कारों को सम्मलित करते है।

अतः व्यक्ति को सामाजिक बनाने में जिन तथ्यों की व्यवस्था का योगदान होता है, उन सभी तथ्यों की व्यवस्था का नाम ही संस्कृति है। संस्कृति शब्द का शाब्दिक अर्थ "सुंदर" "रुचिकर" अथवा "कल्याण" व्यवहार या गुणों से होता है।

Maulana Mazharul Haque Teachers Training College Samastipur Mathurapur Estd. 2010

Date

संस्कृति के रूप में भिन्नता हो सकती है परन्तु उनके उद्देश्यों में नहीं, ये आदर्श मूल्य प्रेरक सिद्धांत और बाह्य उपकरणों को सम्बंध कर उन्हें अनुप्रमाणीत करती है।

संस्कृति से सम्बंधी कुछ क्रियाएँ है जो हमें अपनी संस्कृति के बारे में जागरूक तो करती है, साथ ही साथ हमारा मनोरंजन भी करती है। इन क्रियाओं को ही सांस्कृतिक क्रियाएँ कहते है।

परिभाषाएँ

" संस्कृति प्राणी की सभी प्राकृतिक वस्तुओं और उपहारों तथा प्राणी का सार है, जो मनुष्य के सम्बंध रखते हुए भी उसकी आवश्यकताओं से तात्कालों से परे है।"
- जोसेफ के अनुसार

" संस्कृति आत्मा को व्यापक बनाती है।"
- पंडित जवाहर लाल नेहरू के अनुसार

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College ESTD 2010 Samastipur

Date

सांस्कृतिक कार्यक्रम के उद्देश्य

I. सांस्कृतिक कार्यक्रम बच्चों को सामाजिक, मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक एवं नैतिक क्षमताओं का विकास करती है।

II. इस कार्यक्रम द्वारा बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है।

III. सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सहानुभूति एवं प्रेम की भावना का विकास होता है।

IV. इससे व्यवहारिक कुशलता आती है।

V. इस कार्यक्रम द्वारा विद्यार्थियों में सहकारिता की भावना का विकास होता है।

VI. इसका मुख्य उद्देश्य अपनी अमूल्य संस्कृति या सांस्कृतिक धरोहरों को अपनी आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाना है।

VII. इससे बच्चों का चारित्रिक विकास होता है। नाटक, भजन, गीत, कविता इत्यादि में महापुरुषों के चरित्र का वर्णन होता है। जिसमें दमित इच्छाओं की पूर्ति होती है।

Mazharul Haque Teachers' Training College ESTD. 2010 Samastipur

Date

सांस्कृतिक कार्यक्रम (पक्ष में)

संस्कृति आत्मा कि वह अलौकिक शक्ति है जो समस्त अच्छी बातो, वस्तुओं को सार रूप में ग्रहण करने में मानव की सहायता करती है, इसलिए सांस्कृतिक कार्यक्रम का होना अनिवार्य हो जाता है। एक सशक्त एवं सुसंस्कृतिक मानव ही समाज में आदरणीय माना जाता है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम मानव के भीतर आदर, ज्ञान, विचार, आचरणों इत्यादि के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान करती है। सांस्कृतिक कार्यक्रम देश के अच्छे भविष्य हेतु एक नैतिक वान सभी गुणों से सम्पन्न बालकों को तैयार करने में अतुल्यनीय भूमिका अदा करती है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम (विपक्ष में)

यदि बालक एवं बालिकाओं को केवल सांस्कृतिक कार्यक्रमों के दायरे में ही सीमित करेंगे तो बालक में पूर्ण रूप से विकास न होकर कुछ ही पक्षों में विकास हो पायेगा। बालकों में रचनात्मक एवं बौद्धिक विकास संकुचित हो जायेगी।

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College ESTD. 2010 Samastipur

Date

यदि शिक्षा के उद्देश्य को सफल बनाना है, तो केवल सांस्कृति कार्यक्रमों में भाग लेने से बालक का सम्पूर्ण विकास तथा देश का कल्याण न ही सकता है। इसलिए संतुलित भाषा में भी सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन होना चाहिए।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के लाभ

सांस्कृतिक कार्यक्रम से निम्नलिखित लाभ हैं:-

I. सांस्कृतिक कार्यक्रम समाज में सूचना तथा जागृति फैलाने एवं पहुँचाने का सशक्त माध्यम है।

II. सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने से बच्चों में आत्मविश्वास की वृद्धि होती है।

III. सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने से बच्चों में प्रेम की भावना का उदय, भेद-भाव कम तथा आपसी बन्धुत्व की भावना का विकास होता है।

IV. विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने से बच्चे अपने संस्कृति से परिचित होते हैं।

Date

V. विभिन्न प्रकार से सांस्कृतिक कार्यक्रमों जैसे वाद-विवाद, नाटक, संगीत, नृत्य, रंगोली, भाषण इत्यादि के प्रतियोगिताओं में भाग लेने के फलस्वरूप बच्चों में कल्पनाशक्ति, तार्किकशक्ति, मानसिक शक्ति तथा बौद्धिक शक्ति व क्षमताओं का भी विकास होता है।

सांस्कृतिक क्रियाओं के प्रकार

सांस्कृतिक क्रियाओं के निम्नलिखित प्रकार हैं:-

1. नाटक
2. भाषण
3. गायन
4. जस्ट ए मिनट
5. अंत्याक्षरी
6. पोस्टर मेकिंग
7. रंगोली
8. नृत्य
9. टैलेंट सर्च
10. कविता पाठ
11. खेल-कूद
12. वाद-विवाद
13. जयंती

Haque Teachers' Training College ESTD 2010 Maulana Math

Date

विद्यालय में आयोजित सांस्कृतिक क्रियाओं का विवरण :-

मैं दुनजी प्रकाश (सत्र-2022-24) विद्यालय सहक्रिया कार्यक्रम हेतु चार महीना "Model Inter School, Bahadurpur में कार्यरत रहा।

जहाँ मैंने कक्षा 9 से 10 के मध्य अनेक प्रकार का सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन करवाया, जो विद्यालय तथा विद्यार्थियों के लिए बेहद ही प्रभावपूर्ण रहा। जिसमें अनेक विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया, जिससे उनमें विद्यमान अनेक प्रतिभा उजागर हुई। सभी छात्र/छात्राओं ने उत्साहपूर्ण ढंग से हमें सहयोग किया।

विद्यालय में करवाए गए सांस्कृतिक कार्यक्रम निम्न है:-

1. रंगोली
2. पोस्टर मेकिंग
3. अंत्याक्षरी
4. वाद-विवाद
5. खेल-कूद
6. डॉ राजेन्द्र प्रसाद जयंती

Maharul Haque Teachers' Training College
ESTD. 2010
Samastipur

रंगोली

रंगोली वात्सायन के "कामसूत्र" में वर्णित चौंसठ कलाओं में से एक है। यह अति प्राचीन लोक कला है। रंगोली का एक नाम अल्पना भी है। यह संस्कृत के ओलंपेन शब्द से उद्धृत है, जिसका अर्थ होता है - लेप करना।

रंगोली को सामान्यतः त्योहारों, उत्सव, व्रत, विवाह आदि शुभ अवसरों पर सूखे एवं प्राकृतिक रंगों से बनाया जाता है। इसमें साधारणतः ज्यामितिक, देवी-देवता, कमल का फूल, स्वास्तिक, मंगल कलश, मछलियाँ, मोर, हंस एवं मानव आकृति इत्यादि आकृतियाँ बनाई जाती हैं।

रंगोली को घर की देहरी, आँगन के केन्द्र और उत्सव के लिए निश्चित स्थान के बीच या चारों ओर बनाया जाता है। इसे प्रायः घर की महिलाएँ बनाती हैं।

रंगोली में प्रायः प्रयोग में लाये जाने वाले पारम्परिक रंगों में पीसा हुआ सूखा या गीला चावल, सिन्दूर, रोली, हल्दी सूखा आटा, सूजी, फूल की पंखुरी एवं अन्य

Date

प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है परंतु अब रंगोली में रसायनिक रंगों का भी प्रयोग होने लगा है।

पोस्टर मेकिंग

" पोस्टर मेकिंग " प्रतियोगिता में विद्यार्थी किसी खास प्रकरण अथवा किसी खास दिन या समस्याओं को दृष्टिगोचर कर पोस्टर मेकिंग या पेंटिंग अथवा स्कैच बनाते हैं।

पोस्टर मेकिंग विद्यार्थियों के कल्पनाशक्ति को उड़ान प्रदान करता है, वह अपने भीतर उस प्रकरण से सम्बंधित अपने भावनाओं, संदेशों को प्रस्तुत करते हैं।

अंत्याक्षरी

अंत्याक्षरी प्राचीन काल से चला आ रहा स्मरणशक्ति का परिचायक एक खेल है, जिसमें कहे हुए श्लोक या पद्य के अंतिम अक्षर को लेकर दूसरे व्यक्ति उसी अक्षर से आरंभ होने वाला श्लोक, पद्य या गाना कहता है अथवा गाता है, जिसके उत्तर में फिर पहला व्यक्ति दूसरे के कहे श्लोक या पद्य अथवा गाना के

अंतिम अक्षर से आरंभ होने वाले पद्य, गाना या श्लोक कहता है। इसी प्रकार यह खेल चलता है और जब अपेक्षित व्यक्ति की स्मरण शक्ति जवाब दे जाती है और उसमें पद्यमय उत्तर नहीं बन पाता है, तब उसकी हार मान ली जाती है।

खेल-कूद

"रामकृष्ण परमहंस" का कथन है कि ईश्वर ने संसार की रचना खेल-खेल में की है। अर्थात् परमात्मा को खेल अत्यंत पसंद है। तो फिर परमात्मा की कृति मनुष्य खेलों से क्यों दूर रहे।

जीवन में खेल-कूद का महत्वपूर्ण स्थान होना चाहिए। खेल-कूद से मानव जीवन में अनेक प्रकार की परेशानियों और तनाव, चिंता आदि से मुक्त कर देती है। खेल-कूद स्वास्थ्यवर्धक होते है। ये शरीर के विभिन्न अंगों के उचित संचालन में मददगार होते है। मन की ऊब मिटाने एवं चित्त में प्रसन्नता लाने के लिए खेलों की जितनी भूमिका है, उतनी शायद

Date

किसी और कार्य में नहीं।

विद्यालय में खेल-कूद को काफी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। विद्यालय में विद्यार्थी के जीवन में पढ़ाई के साथ-साथ खेल-कूद को भी महत्वपूर्ण स्थान है।

खेल-कूद के माध्यम से बालकों में तनाव को कम किया जाता है। विद्यार्थी में नयी ऊर्जा का संचार होता है जिसमें वह स्वयं को स्फूर्तिवान महसूस करते है। खेल-कूद से विद्यार्थी का शारीरिक विकास जैसे माँसपेशियाँ सुगठित होती है। शारीरिक विकास के साथ-साथ विद्यार्थियों में मानसिक विकास भी होता है।

वाद-विवाद

वाद-विवाद किसी विषय पर चर्चा की औपचारिक विधि है। वाद-विवाद में दो परस्पर विपरीत विचारों के समर्थक अपना-अपना तर्क दे सकते है एवं दूसरो के कथनों का खंडन करने का प्रयत्न करते है।

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training ESTD.2010 Samastipur

Date

वाद-विवाद सार्वजनिक बैठकों में हो सकता है, शैक्षणिक संस्थानों एवं विद्यार्थी सभाओं (जैसे - संसद) में हो सकता है।

वाद-विवाद एक औपचारिक चर्चा है जिसमें प्रतिभागियों के अलावा प्रायः एक संचालक होता है एवं श्रोता होते हैं। प्रतियोगी वाद-विवाद करने अन्य टीमों के साथ वाद-विवाद करने के लिए आयोजित किया जाता है। जो विद्यालयों, महाविद्यालयों, स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा का आयोजन किया जाता है।

"विद्यालय एवं कॉलेजों" में 'वाद-विवाद' स्पष्ट नियमों के साथ एक प्रतियोगिता के रूप में आयोजित की जाती है।

वाद-विवाद प्रतियोगिता में एक या अधिक निर्णायक अध्यक्षता कर सकते हैं।

Date

डॉ राजेन्द्र प्रसाद जयंती

डॉ राजेन्द्र प्रसाद की जयंती पर भाषण :-

आदरणीय प्रधानाचार्य, शिक्षकगण और मेरे प्रिय मित्रों, मैं आज आपको हमारे देश के इतिहास के प्रख्यात नेताओं में से एक डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के जीवन हमारे इतिहास की किताबों में सिर्फ एक अध्याय नहीं है बल्कि एक प्रकाश स्तंभ है जो सेवा, समर्पण और नेतृत्व के मार्ग को रोशन करता रहता है।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का जन्म 3 दिसम्बर, 1884 को जीरादाई, बिहार में हुआ था और एक छोटे शहर से भारत के पहले राष्ट्रपति बनने तक की उनकी यात्रा दृढ़ता और प्रतिबद्धता की एक उल्लेखनीय कहानी है। उनके शुरुआती वर्षों में ज्ञान की प्यास थी और उन्होंने दृढ़ संकल्प के साथ उच्च शिक्षा प्राप्त की।

राजनीतिक क्षेत्र में उनका प्रवेश केवल एक विकल्प नहीं बल्कि एक आह्वान था।

जेन्द्र प्रसाद ने भारत की स्वतंत्रता की
करते हुए, महात्मा गांधी और अन्य
ओं के साथ खड़े होकर, भारतीय राष्ट्रवादी
पन में सक्रिय रूप से भाग लिया।

अहिंसा और सविनय अवज्ञा
प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने उन्हें एक
क दिशा-निर्देश वाले नेता के रूप में
खड़ा किया।

डॉ. प्रसाद के जीवन के
धिक अध्यायों में से एक भारतीय
धान के निर्माण में उनकी भूमिका थी।
धान सभा के अध्यक्ष के रूप में,
ोंने एक ऐसे संविधान का मसौदा
र करने की जटिलताओं का समाधान
ा जो दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र
लिए मार्गदर्शक दस्तावेज होगा। इस
हत्वपूर्ण अवधि के दौरान उनके नेतृत्व
हमारे लोकतांत्रिक मूल्यों और सिद्धांतो
नींव रखी।

26 जनवरी 1950 को
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने भारत गणराज्य के

Date

पहले राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली। 1962 तक दो कार्यकाल तक चले उनके राष्ट्रपति पद की विशेषता न्याय, स्वतंत्रता और समानता के प्रति प्रतिबद्धता थी।

उन्होंने देश के सर्वोच्च पद को गरिमा और गरिमा प्रदान की और भविष्य के नेताओं के लिए मानक स्थापित किए।

राजनीति से परे डॉ. प्रसाद का जीवन सादगी और विनम्रता से परिपूर्ण था। राष्ट्र की प्रगति के लिए ग्रामीण विकास और शिक्षा के महत्व पर जोर देते हुए, उनका योगदान सामाजिक और शैक्षिक कारणों तक बढ़ा।

जब हम डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के जीवन पर विचार करते हैं, तो आइए हम राष्ट्र की सेवा के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता से प्रेरणा लें।

उनकी यात्रा हमें सिखाती है कि नेतृत्व केवल सत्ता के बारे में नहीं बल्कि जिम्मेदारी और सेवा के बारे में है।

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College ESTD 2010 Samastipur Mathurapur

Date

यह प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने पर भी जो सही है उसके लिए खड़े रहने के बारे में है।

इस अवसर पर, आइए हम न केवल डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को याद करें बल्कि उन मूल्यों को अपनाने का भी संकल्प लें जिनके लिए वे खड़े रहे। आइए हम जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रतिबद्ध हों जो हमारे राष्ट्र की प्रगति में सकारात्मक योगदान दें।

धन्यवाद।

Maulana Mazharul Haque Teachers Training College ESTD 2010 Samastipur